

खोलो मेरी मैया लिये के द्वार खोल  
मेरी माँ रूला माँ तेरा प्यार है अनुरा जिसका न मोल  
खोलो मेरी मैया

⑨ जब-जब मुझको सबने रूखाया  
तब तब तुमने याद दिलाया

अब मुझको न तुकराना ॥२॥ रे मनुआ न डोब  
तेरा प्यार है - खोलो मेरी मेया

तेरा प्यार है - - - - - खोलो मेरी मेया  
 ③ स्वार्थ में सब करते प्रीति इस दुनियाँ की देखी प्रीति  
 मुझसा अभाग कोई नहीं मैं न कर प्यार का मोल  
 तेरा प्यार है - - - - - खोलो मेरी मेया

तेरा प्यार है - - - - - खोले मेरी माँ - - - - -  
 (3) दुनियाँ में, कुछ भी न भाया अपना बनाकर के मर भाया  
 अब तो दया की दृष्टी करो मेरी प्यार न मेरा तो ब  
 तेरा प्यार है - - - - - खोले मेरी माँ - - - - -

तेरा प्यार है - - - - - खोलो मेरी मेया  
 ⑧ जीवन में न गया सपना कोई मिलान मुझे आपना  
 और न भर काओ मेरी मेया ममता का रस घोल  
 तेरा प्यार है - - - - - खोलो मेरी मेया

(2) जब से तेरी शरण में आया  
तेरी दया का, पार न पाया  
“श्री बाबा श्री” को लाल बना के दिया स्वर्गानन्द  
तेरा प्यार है - - - - - खोलो मेरी मेरा